PAPER VIII (A)
UNIT II
SEMESTER II

TOPIC :- PROCESS OF KNOWING

DATE:- 20.7.2020

INDU SINHA
THE GRADUATE SCHOOL COLLEGE FOR WOMEN
(ASSISTANT PROFESSOR)
B.Ed DEPARTMENT

जानने की प्रक्रिया ज्ञान ग्रहण करने वाले अंगों और मस्तिष्क के सहयोग से कुछ ही समय में सम्पन्न हो जाती है। कोर्इ व्यकित स्वयं अपने प्रयासों से चीजोंतथ्यों के बारे में जान सकता है या फिर, दूसरों के अनुभवों को सुनकर, किताबों से पढ़कर या आधुनिक संचार माध्यमों के जरिए जान सकता है।

जो जानते हैं, जरूरी नहीं कि वे समझते भी हों। लेकिन जो समझते हैं, वे जानते भी हैं। जानना पहले होता है, समझना उसके बाद। यह तत्काल बाद भी हो सकता है और बरसों भी लग सकते हैं । कभी-कभी जानना और समझना साथ-साथ चलता है। जानते हुए समझना से ज्यादा बेहतर है- समझते हुए जानना। जानना आसान है, समझना कठिन। जानना सतही होता है, एक विमीय होता है, जबकि समझने में कर्इ आयामों से गुजरना पड़ता है। वैसे, गहनता और गंभीरतापूर्वक जानना को समझना कह सकते हैं।

जानने की प्रक्रिया ज्ञान ग्रहण करने वाले अंगों और मस्तिष्क के सहयोग से कुछ ही समय में सम्पन्न हो जाती है। कोर्इ व्यकित स्वयं अपने प्रयासों से चीजोंतथ्यों के बारे में जान सकता है या फिर, दूसरों के अनुभवों को सुनकर, किताबों से पढ़कर या आधुनिक संचार माध्यमों के जरिए जान सकता है। लेकिन इन्हीं चीजोंतथ्यों के बारे में समझना भी हो तो केवल ज्ञान ग्रहण करने वाले अंगों और मस्तिष्क का उपयोग व्यर्थ साबित होगा।

समझने की प्रक्रिया में जिसका भरपूर योगदान होता है, वह है- बुद्धि। बुद्धि का प्रमुख काम यह है कि यह उनको सोचने के लिए प्रेरित और कभी-कभी बाध्य भी करती है, जिनके पास यह होती है। होती तो सभी मनुष्यों के पास है, किंतु स्तर या मात्रा में भिन्नता होती है। बुद्धि के स्तर में अंतर होने के कारण सोचने के स्तर में भी अंतर हो ही जाता है। सोचने के इस अंतर के कारण समझने में फर्क आना स्वाभाविक है। सोचने और फिर समझने की इस प्रक्रिया में व्यकित का पूर्वज्ञान, पूर्व अनुभव और विवेक की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

संज्ञान (cognition, कोग्निशन) कुछ महत्वपूर्ण मानसिक प्रक्रियाओं का सामूहिक नाम है, जिनमें ध्यान, स्मरण, निर्णय लेना, भाषा-निपुणता और समस्याएँ हल करना शामिल है। संज्ञान का अध्ययन मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र, भाषाविज्ञान, कंप्यूटर विज्ञान और विज्ञान की कई अन्य शाखाओं के लिए ज़रूरी है। मोटे तौर पर संज्ञान दुनिया से जानकारी लेकर फिर उसके बारे में अवधारणाएँ बनाकर उसे समझने की प्रक्रिया को भी कहा जा सकता है।[1]

संज्ञान' शब्द का अर्थ है 'जानना' या 'समझना'। यह एक ऐसी बौद्धिक प्रक्रिया है जिसमें विचारों के द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है। संज्ञानात्मक विकास शब्द का प्रयोग मानसिक विकास के व्यापक अर्थ में किया जाता है जिसमें बुद्धि के अतिरिक्त सूचना का प्रत्यक्षीकरण (perception), पहचान (recognition), प्रत्याह्वान (remembering) और व्याख्या आता है। अतः संज्ञान में मानव की विभिन्न मानसिक गतिविधियों का समन्वय होता है। मनोवैज्ञानिक 'संज्ञान' का प्रयोग ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया के रूप में करते हैं। 'संज्ञानात्मक मनोविज्ञान' शब्द का प्रयोग गुस्ताव नाइसर (Ulric Gustav Neisser) ने अपनी पुस्तक 'संज्ञानात्मक मनोविज्ञान' में सन् 1967 ई0 में किया था। संज्ञानात्मक विकास इस बात पर जोर देता है कि मनुष्य किस प्रकार तथ्यों को ग्रहण करता है और किस प्रकार उसका उत्तर देता है। संज्ञान उस मानसिक प्रक्रिया को सम्बोधित करता है जिसमें चिन्तन, स्मरण, अधिगम और भाषा के प्रयोग का समावेश होता है। जब हम शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में संज्ञानात्मक पक्ष पर बल देते है तो इसका अर्थ है कि हम तथ्यों और अवधारणाओं की समझ पर बल देते हैं।

यदि हम विभिन्न अवधारणाओं के मध्य के सम्बन्धों को समझ लेते हैं तो हमारी संज्ञानात्मक समझ में वृद्धि होती है। संज्ञानात्मक सिद्धान्त इस बात पर बल देता है कि व्यक्ति किस प्रकार सोचता है, किस प्रकार महसूस करता है और किस प्रकार व्यवहार करता है। यह सम्पूर्ण प्रक्रिया अपने अन्दर ज्ञान के सभी रूपों यथा स्मृति, चिन्तन, प्रेरणा और प्रत्यक्षण को शामिल करती है

-इंडिया का लक्ष्य है विद्यालयों और अध्यापकों के लिए शिक्षण–शास्त्रीय बदलाव हासिल करना। अध्यापक विकास ओईआर राष्ट्रीय नीति के लक्ष्यों के साथ सर्वांगसम हैं। टीईएसएस-इंडिया के मूल में सीखने वाले के रूप में विद्यार्थी है और उनके सीखने के अभिकर्ता के रूप में अध्यापक है। टीईएसएस-इंडिया ओईआर का मकसद अध्यापकों को, सीखने की क्रिया और सीखने वालों के प्रति धारणाएं बनाने वाले पारंपरिक कार्याभ्यासों एवं आदतों से दूर कर उन्हें अधिक सशक्त करने वाले कार्याभ्यास की ओर अग्रसर करने का है। वे अध्यापकों को अपनी सीख को अपने कार्याभ्यास में लागू करने, उनके प्रदर्शनों की सूची को विस्तार देने और शिक्षा के लक्ष्यों की उनकी समझ में परिवर्तन लाने के विचार एवं साधन प्रदान करते हैं। अध्यापक परिवर्तन का मॉडल प्रयोग करने के बारे में है और अध्यापकों द्वारा गलतियां किए जाने और खुद को चुनौती देने से मिलने वाले आनंद और प्रेरणा के महत्व को मान्यता देता है।

पाठों का नियोजन करना: विद्यार्थी प्रभावी ढंग से सीख सकें इसके लिए अध्यापकों को ऐसी गतिविधियों की योजना बनानी होगी जो उनके विद्यार्थियों के पूर्वज्ञान में वृद्धि करती हों। इस मुख्य संसाधन में विद्यार्थियों के सीखने को आगे बढ़ाने के लिए पाठ की योजना बनाते समय अपनाई जाने वाली पद्धतियां और क्रियाएं दी गई हैं।

सभी को शामिल करना: कक्षा की गतिविधियों में सभी विद्यार्थियों को भाग लेने का अवसर मिले यह सुनिश्चित करने के लिए अध्यापकों को अपने विद्यार्थियों को जानना होगा, यह जानना होगा कि वे क्या जानते हैं और कैसे जानते हैं। यह मुख्य संसाधन सभी विद्यार्थियों को सीखने के अवसर उपलब्ध कराने के तरीकों के लिए कुछ विचार प्रस्तुत करता है।

सीखने के लिए बोलें: विद्यार्थियों के लिए एक-दूसरे से और अपने अध्यापक से बात करने के अवसर पैदा करना सीखने का समर्थन करने के लिए अत्यावश्यक है। विद्यार्थी बातचीत के जरिए अपनी समझ साझा करते हैं और उसे नई सीख से जोड़ते हैं। सभी आयु के विद्यार्थियों के लिए बातचीत महत्वपूर्ण है। यह मुख्य संसाधन दर्शाता है कि अध्यापक कक्षा में विद्यार्थियों के लिए उत्पादक बातचीत में संलग्न होने के अवसर कैसे आयोजित कर सकते हैं।

जोड़ी में कार्य का उपयोग करना: जोड़ी में कार्य से विद्यार्थी अपनी समझ के बारे में बातचीत करके और उसे एक-दूसरे तक संप्रेषित करके एक-दूसरे से सीखने में समर्थ बनते हैं। इस मुख्य संसाधन में इस संबंध में विचार दिए गए हैं कि कैसे जोड़ी में कार्य का उपयोग सभी विषयों में और सभी आयु के विद्यार्थियों के सीखने को सहारा देने के लिए प्रभावी ढंग से किया जा सकता है।

चिंतन को बढ़ावा देने के लिए खुले प्रश्न पूछना: अच्छे प्रश्न पूछना अध्यापकों के लिए एक मुख्य कौशल होता है। खुले सवालों से विद्यार्थियों में चिंतन प्रेरित हो सकता है। ऐसे प्रश्न यह जानने में भी अध्यापकों की मदद करते हैं कि उनके विद्यार्थी क्या जानते हैं। इस मुख्य संसाधन में अपने विद्यार्थियों के उत्तरों को ध्यानपूर्वक सुनने के साथ-साथ, उनके चिंतन को विस्तार देने के लिए अलग अलग प्रकार के प्रश्नों का उपयोग करने के विचार दिए गए हैं।

निगरानी करना और फीडबैक देना: यह मुख्य संसाधन अध्यापकों को प्रेक्षण करने के लिए और, चिंतन प्रेरित करने हेतु प्रश्नों के साथ हस्तक्षेप करने से पहले विद्यार्थियों की बातचीत को और उससे वे जो समझ विकसित कर रहे हैं उसको ध्यान से सुनने के लिए प्रोत्साहित करता है।

समूहकार्य का उपयोग करना: विद्यार्थियों को समूह में कार्य करने हेतु संगठित करना और उन्हें एक-दूसरे के विचारों में वर्धन करने तथा अपनी समझ विकसित करने के लिए अवसर देना। इस मुख्य संसाधन में अध्यापकों के लिए विभिन्न गतिविधियों में विद्यार्थियों को संगठित करने के कुछ तरीके दिए गए हैं।

प्रगति और प्रदर्शन का आकलन करना: विद्यार्थियों की प्रगति का आकलन करने से अध्यापकों को वह प्रमाण मिलता है जिसकी

उन्हें अपने प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अगली सीखने (ज्ञानार्जन) की गतिविधि की योजना बनाने के लिए आवश्यकता होती है। इस मुख्य संसाधन में अलग अलग प्रकार के आकलन समझाए गए हैं और इस बात की छानबीन की गई है कि निर्देश से पहले, उनके दौरान और उनके बाद आकलन कैसे किया जा सकता है।

स्थानीय संसाधनों का उपयोग करना: संसाधन सीखने की क्रिया को विद्यार्थियों के लिए सुपरिचित तथा अर्थपूर्ण बना कर गतिविधियों में प्रामाणिकता उत्पन्न कर सकते हैं। संसाधनों से विद्यार्थियों को वस्तुओं (जैसे फलों की फांक और काउंटर) से प्रतीकों (जैसे संख्याएं या भिन्न) तक ऐसे तरीके से आने में मदद मिलती है जो उनके लिए अर्थपूर्ण है। इस प्रकार, संसाधनों का रचनाशील ढंग से उपयोग करने से सीखने की गतिविधियां विद्यार्थियों के लिए अधिक प्रेरक एवं प्रासंगिक बन जाती हैं।

कहानी सुनाना, गाने, भूमिका पालन और नाटक: इस मुख्य संसाधन में इस बात के उदाहरण दिए गए हैं कि कैसे अध्यापक संपूर्ण पाठ्यक्रम के विभिन्न क्षेत्रों में कहानी सुनाने, गीत, भूमिका-अभिनय तथा नाटकों का उपयोग करके विद्यार्थियों को विचार विकसित करने एवं एक-दूसरे से ज्ञान साझा करने में सक्रिय रूप से संलग्न कर सकते हैं।